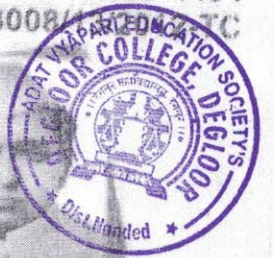
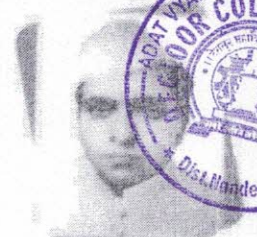


ISSN 2320-4494

RNI No. MAHAUL03008/2017



# POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal  
UGC Approved

Special Issue - September 2017

म.शि.प्र.मंडळाचे

सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव आयोजित  
आंतरविद्याशास्त्रीय राष्ट्रीय परिषदेचा विशेषांक

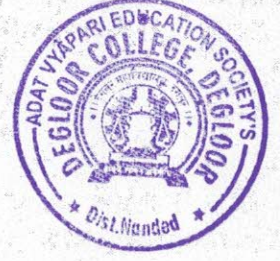
## हुंडा - एक समस्या : आढ्याने व उपाय

दि. ११/०९/२०१७

सोळंके व्ही. आर.  
(संपादक)

डॉ. व्ही. पी. एडवार  
(प्राचार्य)

Dr. Anil Chidrawar  
I/C Principal  
A.V. Education Society's  
Degloor College, Degloor Dist. Nanded



म. शि. प्र मंडळाचे  
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव

जि. बीड. ४३११३१

आयोजित  
आंतरविद्याशाखीय राष्ट्रीय परिषद  
“हुंडा- एक समस्या : आव्हाने व उपाय”

दि. ११ सप्टेंबर २०१७

मुख्य संपादक

डॉ. व्ही. पी. पवार

प्राचार्य

सहसंपादक

श्री. जी. टी. मोकासरे

श्री. ए. एस. पेंटावार

डॉ. एन. के. मुळे

डॉ. डि. एस. शिंदे

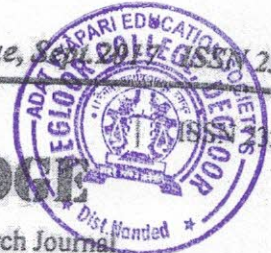
श्री. एस. यु. स्वामी

संपादक

श्री. बी. आर. बोडके

# POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal



**Vol. I, Issue - I**  
**Special Issue, Sept. 2017**

**Editorial Officer**

**Shraddha Enterprises**  
Infront of Tahsil Office,  
Near Nilkamal Hotel,  
Nagar Road,  
Beed -431 122

Contact : 9420655507

E-mail : prakashkale.kale@gmail.com

**Published By :**

Mrs. Lata Sadashiv Sarkate

Price : Rs. 300/-

**Advisory :-**

**Hon. Dr. Sudhir Gavhane**

Ex. Vice Chancellor Y.C.M.U. Nasik  
& Professor of Mass Communication  
& Journalism Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Hon. Dr. V. B. Bhise**

Professor, Dept. of Economics  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Hon. Dr. Madan Shivaji**

Management Council Member  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Hon. Dr. Bhagwat Katare**

Ex. Director, BCUD  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Hon. Dr. Sanjay Nawale**

Head of Dept. Hindi  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Hon. Dr. Paralakar Kanchan**

Principal, Mahila College, Georai

**Hon. Dr. Ashok Mohekar**

Ex-Management Council Member  
Dean, Faculty of Science,  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**EDITOR**

**Dr. Sadashiv Haribhau Sarkate**

Ex-Chairman-BOS in Marathi, Dr.B.A.M.U. Aurangabad  
Asst. Professor & Head, Dept. of Marathi, JBSPM's  
Arts & Science College, Shivajinagar, Gadhi Tq. Georai Dist. Beed

**EDITOR BOARD**

**Dr. Shirish Patil**

Ex-Dean, Faculty of Arts  
N.M. University Jalgaon

**Dr. Bharat Handibag**

Ex-Dean, Faculty of Arts  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. Vilas Khandare**

Ex-Dean, Faculty of Social Sciences  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. Ashok Deshmane**

Head of Dept. Marathi  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad  
**Dr. Sudhakar Shendge**  
Professor of Hindi  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. D.P. Takale**

Asso. Professor & Head  
Dept. of Economics  
L.B.S. College, Partur Dist. Jalna

**Dr. Appasaheb Humbe**

Ex-Management Council Member  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. Ulhas Shinde**

Ex-Dean, Faculty of Engineering  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. Shahaji Gaikwad**

Ex-Chairman, BOS in English  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. Sukumar Bhandare**

Ex-Chairman, BOS in Hindi  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Mr. Ramesh Ringne**

Prof. Babu Ghokshe  
Mr. Shivaji Kalkade  
Dr. Shakur Shaikh Husain

**Dr. Vishwas Patil**

Radha Nagari College, Radha  
Nagari, Dist. Kolhapur

**Dr. Shivaji Yadhav**

Shivchhatrapati College,  
Pachod, Dist. Aurangabad

**MANAGING EDITORS**

**Mr. Vinod Kirdak**

Dr. Datta Tangalwad  
Mr. Kalandar Pathan  
Dr. Suhas Morale  
Dr. Baliram Katare

**Dr. Pratibhatai Patil**

Ex-Management Council Member  
Professor & Head, Dept. of Pub. A  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. Snehal Taware**

Ex-Chairman : BOS in Marathi  
University of Pune, Pune

**Dr. Taher H. Pathan**

Aligad Muslim university, Aligad (U.P.)

**Dr. S.D. Talekar**

Professor, Dept. of Commerce  
L.B.S. College, Partur Dist. Jalna

**Dr. S.R. Takale**

Principal, Sant Sawatamali, College,  
Phulambri Dist. Aurangabad

**Dr. Bharat Khandare**

Principal, Swami Vivekanand College,  
Mantha. Dist. Jalna

**Dr. Vishwas Kadam**

Principal, JBSPM's Arts & Science  
College, Gadhi Tq. Georai, Dist. Beed

**Dr. Ratandeep Deshmukh**

Ex-Management Council Member  
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

**Dr. Dilip Khairnar**

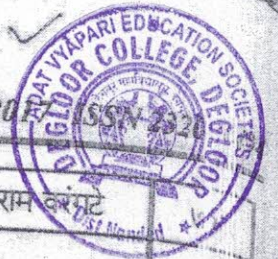
Professor, Sociology  
Deogiri College, Aurangabad

**Dr. Laxmikant Shinde**

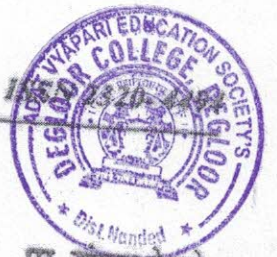
Asst. Professor  
JES College, Jalna

**Asst. Prof. Mohan Kulkarni**

Dr. Adgaonkar Ganesh  
Dr. Santosh Chauhan  
Dr. Rajkumar Yellawad



|    |   |  |     |
|----|---|--|-----|
| २४ | हुंडाप्रथा: कारणे, वास्तव परिणाम व उपाय                             | प्रा. सत्वशिला दत्तराम बरगटे                 |     |
| २५ | भारतीय समाजव्यवस्थेच्या विवाहातील हुंडा: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण  | प्रा. डॉ. सुरेश वि. धनवडे                    | १९  |
| २६ | दहेज समस्या से सुरक्षा और संविधान                                   | प्रा. डॉ. बिरंगणे एस.एस.                     | २३  |
| २७ | हुंड्याचे दुष्परिणाम व उपाय   | डॉ. साहेब राठोड                              | २४  |
| २८ | हुंडा सामाजिक समस्या व उपाय   | प्रा. ठोंबरे एम.डी.                          | २०  |
| २९ | हुंडा एक सामाजिक समस्या   | राजश्री विष्णु पांचाळ                        | २२  |
| ३० | हुंडा प्रथा एक समस्या कारणे, कायदे व उपाययोजना                      | प्रा. डॉंगरे विजय तुकाराम                    | २१  |
| ३१ | हुंडाप्रथा : कारणे, वास्तव, परिणाम व उपाय                           | डॉ. नंदकिशोर मुळे                            | २३  |
| ३२ | हुंडा प्रथा : सामाजिक समस्या व उपाय                                 | डॉ. आर.एन. करपे, म्हस्के आर. बी.             | २०२ |
| ३३ | दहेज समस्या और कानून  | कोष्टी भाग्यश्री विलास                       | २०२ |
| ३४ | हमें दोष न देना ....! (दहेज प्रथा और वर्तमान संदर्भ)                | डॉ. भाउसाहेब रा. नळे                         | २०६ |
| ३५ | हुंडा - सामाजिक समस्या व उपाय                                       | डॉ. सुनंदा एकनाथराव अह्लेर                   | २०  |
| ३६ | हुंडाप्रथा कारणे, वास्तव, परिणाम व उपाय                             | प्रा. डॉ. शशिकांत मुकुंदराव आलटे             | २२१ |
| ३७ | हुंडा प्रथा: कारणे, वास्तव, परिणाम                                  | प्रा. वैशाली बागुल                           | २२८ |
| ३८ | हुंडाप्रथा : ऐतिहासिक पार्श्वभूमी व सद्यस्थिती                      | डॉ. बेंजलवार एस.जी.                          | २२२ |
| ३९ | हुंडा : सामाजिक समस्या व उपाय                                       | भगवान शिंदे                                  | २२५ |
| ४० | हुंडा प्रथा कारणे, वास्तव, परिणाम व उपाय                            | सहाय्यक प्रा. दिपक भिला चौधरी                | २२७ |
| ४१ | भारतातील हुंडा समस्या : कारणे, परिणाम व उपाय                        | प्रा. रामराव चव्हाण                          | २३० |
| ४२ | हुंडा प्रथा कारणे, वास्तव, परिणाम व उपाययोजना                       | प्रा. डाके अनिल रामराव                       | २३३ |
| ४३ | हुंडा पध्दती: कारणे, परिणाम व उपाय योजना                            | प्रा. संजय देबडे                             | २३६ |
| ४४ | हुंडाविषयक कायदे  | प्रा. डॉ. जगदिश एस. देशमुख                   | २४२ |
| ४५ | हुंडा समस्येचे मराठी कादंबरीतून आलेले चित्रण                        | प्रा. देशमुख विधीषण                          | २४५ |
| ४६ | हुंडा प्रथा आणि हुंडाबळी  | डॉ. धायगुडे ज्योती सुभाषराव                  | २४९ |
| ४७ | हुंडाप्रथा एक सामाजिक समस्या  | प्रा. आर. बी. काळे                           | २५२ |
| ४८ | हुंडाप्रथा कारणे वास्तव परिणाम व उपाय                               | प्रा. श्रीमती. धुमाळ सीमा काशिनाथराव (एरंडे) | २५६ |
| ४९ | हुंडा एक सामाजिक - आर्थिक समस्या                                    | डॉ. ज्ञानेश्वर जिगे                          | २५८ |
| ५० | दहेज प्रथा: चुनौतियाँ और सुझाँव हिंदी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में | डॉ. बळीराम राख                               | २६१ |
| ५१ | हुंडा ही आधुनिक काळातील दाहकता                                      | जाधव श्रीराम दामला                           | २६२ |



## हुंडा पध्दती: कारणे, परिणाम व उपाय योजना

प्रा. संजय देवढे

देगलूर महाविद्यालय देगलूर

प्रस्तावना

भारतीय समाजामध्ये अंधश्रद्धा, निरक्षरता, जातीव्यवस्था, लिंगभेद, हुंडा पध्दती यासारख्या अनेक सामाजिक समस्या आजही विद्यमान आहेत. यातील हुंडा पध्दती ही भारतीय समाजातील सर्वांत अनिष्ट प्रथा होय. आज २१ व्या शतकात भारतीय समाजातील अनेक वाईट प्रथा सामाजिक सुधारणांच्या चळवळीमुळे बंद झाल्या असल्यातरी हुंडा पध्दती ही कुप्रथा मात्र समाजामध्ये दिवसेंदिवस खुपच बळकट होत चाललेली दिसते. आज हुंडा पध्दत भारतीय समाजात सर्वमान्य प्रथा बनलेली आहे. याचे कारण हुंडा पध्दतीला लाभलेला धार्मिक आधार होय. इ.स.पूर्वकाळातील अथर्ववेदात विवाहाच्या वेळी मुलीसोबत वधुपित्याने शंभर गाई दिल्या पाहिजेत असा उल्लेख आहे तसेच देवी देवीतांच्या विवाहप्रसंगी रामसाठ हुंडा दिल्याच्या नोंदी धर्म ग्रंथात आढळतात. राम आणि सिता विवाहप्रसंगी रामाला देण्यात आलेला हुंडा तसेच महाभारतात द्रौपदी, सुभद्रा, उत्तरा यांच्या विवाहप्रसंगी दिलेल्या भेटवस्तुंचे वर्णन आहे.

हुंड्याचा अर्थ:-

विवाहमध्ये वधुला स्त्रिधन म्हणून दिलेल्या सर्व वस्तु आणि वराला दिलेल्या मौल्यवान भेटवस्तु या दोहोंवाही समावेश हुंड्यामध्ये होतो. मॅक्स रेडीन यांच्या मते, विवाहप्रसंगी वर किंवा वधुला तिच्या आईवडीलांकडून प्राप्त होणारी संपत्ती म्हणजे हुंडा होय. वेबस्टरच्या शब्दकोषानुसार, विवाहाच्या वेळी स्त्रि आपल्या सोबत जी संपत्ती, मौल्यवान वस्तु किंवा इस्टेट आणते त्यास हुंडा असे म्हणतात. हुंडा प्रतिबंधक कायदा १९६१ नुसार, विवाहसोहळ्यापूर्वी किंवा विवाहानंतर वर आणि वधु या दोन पक्षामध्ये मौल्यवान वस्तु, स्थावर व जंगम संपत्तीची झालेली देवान-घेवान म्हणजे हुंडा होय.

हुंडा पध्दतीची कारणे:-

१. सर्वमान्य सामाजिक प्रथा:-

भारतीय समाजामध्ये हुंडा पध्दतीला एक सर्वमान्य सामाजिक प्रथेचे स्वरूप प्राप्त झाले आहे. हुंडा देणे व घेणे या गोष्टीला समाजात मान्यता लाभलेली आहे. इतकेच नसून हुंडा देणे व घेणे ही बाब आता सामाजिक प्रतिष्ठेशी जोडली गेलेली आहे. कोणत्याही गोष्टीला एकदा सामाजिक प्रथेचे स्वरूप प्राप्त झाले की लोक त्या गोष्टीची फारसी चिकित्सा न करता तिचे पालन करतात. एवढेच नसून जे लोक या प्रथेचे पालन करीत नाहीत त्यांची समाजाद्वारे टिंगलटबाळी, निंदा किंवा उपहास केले जाते.

२. पुरुषप्रधान समाजव्यवस्था:-

भारतामध्ये आर्यांच्या आगमनापूर्वी मातृसत्ताक समाजव्यवस्था होती त्यामुळे महिलांचा दर्जा पुरुषांपेक्षा श्रेष्ठ होता परंतु आर्यांच्या आगमनानंतर मातृसत्ताक समाजव्यवस्थेचा न्हास होऊन पुरुषसत्ताक समाजव्यवस्था अस्तित्वात आली या व्यवस्थेत पुरुषांना स्त्रियांच्या तुलनेत श्रेष्ठ मानले गेले. पुरुषांपेक्षा स्त्रियांना दुय्यम मानल्या गेल्यामुळे विवाहाच्या वेळी वराला वधुपित्याकडून भेटवस्तु मिळणे हा वराचा हक्क मानला गेला.

३. विवाहासाठी जातीचे निर्बंध:-

हिंदु समाजव्यवस्था ही जातीव्यवस्थेवर आधारित आहे. जातीव्यवस्थेत व्यक्तीच्या जीवनावर अनेक निर्बंध लादले गेले. विवाह ही बाब यास अपवाद नाही. व्यक्तीच्या विवाहाच्या वेळी आपल्या जातीतील जोडीदार निवडण्याचे बंधन असते या बंधनामुळे जोडीदाराच्या निवडीवर मर्यादा पडतात.

४. सामाजिक प्रतिष्ठेच्या खोटा कल्पना:-

हुंडा पध्दतीला आज सामाजिक प्रतिष्ठा लाभली आहे. जास्त हुंडा देणे किंवा घेणे ही बाब व्यक्तीची प्रतिष्ठा वाढविणारी गोष्ट ठरत आहे. त्यामुळेच आज लोक हुंड्याच्या देवान-घेवानीच्या गोष्टी समाजातच सांगतात.

५. मुलीचे लग्न योग्य वयात करण्याचे दडपण:-

आपल्या मुलीचा विवाह योग्य वयात विशेषतः वयात आल्यानंतर व्हावा असे प्रत्येक मुलीच्या कुटुंबात बघते. मुलांचे वयात आल्यानंतर किंवा मुलीच्या लग्नाचे वय उलटून गेले की तिच्या सोबत काही वाईट वेळी तिच्याकडून काही चुकीच्या गोष्टी घडतात याची भिती मुलीच्या आईवडीलांच्या मनात असते. त्यामुळे आज होऊन प्रतिष्ठा घुळीस मिळेल अशी पालकांच्या मनात भिती निर्माण होते त्यामुळे हुंडा देऊन लवकरात लग्न किंवा लग्न करून मुलांचे आईवडील मुलीच्या जबाबदारीतून मुक्त होण्याचा प्रयत्न करतात.

६. मुलीला चांगले स्थळ मिळण्याची इच्छा:-

आपल्या मुलीचा विवाह चांगल्या व प्रतिष्ठित कुटुंबातील मुलांसोबत व्हावा, आपला जावाई शोधून घ्यावा असे प्रत्येक मुलीच्या आईवडीलांना वाटते. कारण असे स्थळ मिळाले तरच आपली मुली चांगले लग्न करू शकते असे पालकांना वाटते. त्यामुळे मुलीला चांगले स्थळ मिळवण्यासाठी कितीही हुंडा देण्याची तयारी असते.

७. मुलीच्या विवाहसर्गातील अडचणी:-

कधी मुलीच्या विवाहाच्या मार्गात अनेक अडचणी निर्माण होतात उदाहरणार्थ अपंगपणा, कुसण, शारीरिक त्रास, वर जास्त असणे, अल्पशिक्षण किंवा निरक्षरता इत्यादी त्यामुळे जास्त हुंडा देऊन त्यामुळे लग्न करण्याचा प्रयत्न त्या मुलीचे आईवडील करतात. अशा प्रकारे भारतीय समाजात हुंडा प्रथा ही समस्या एकाच कारणातून निर्माण झाली नसून अनेक कारणांमुळे एक परिणाम आहे.

हुंडा पध्दतीचे दुरुपरिणाम:-

हुंडा पध्दती ही भारतीय समाजातील एक अगिड प्रथा असून याची सर्वांत जास्त झळ मुलींना सोबत आहे. हुंडा पध्दतीचे अनेक वाईट परिणाम आहेत ते पुढीलप्रमाणे आहेत.

१. हुंड्यासाठी छळ व हुंडा बळी:-

हुंडा पध्दतीचा सर्वांत वाईट व भीम दुरुपरिणाम म्हणजे हुंड्यासाठी नवीनवाहित तरुणीचा अंश पाहणे हुंड्यासाठी होय. हुंड्यासाठीच्या छळांमुळे अनेक तरुणीच्या सुखी संसाराची रचना अल्पावधितच उध्वस्त होऊन अनेक तरुणींना आपला जीवही गमवावा लागतो. भारतामध्ये राष्ट्रीय गुरू नॉंद विधाय (NCRB) च्या अहवालात २०१५ मध्ये हुंड्यासाठी एकूण ७६३४ घटना घडल्या आहेत. याचा अर्थ देशातील तासाला एक हुंड्यासाठी आहे. उत्तरप्रदेशात सर्वांत जास्त २३३५ हुंड्यासाठी घटना घडल्या आहेत. याचा अर्थ एकूण हुंड्यासाठी तरुणीच्या तिच्यापैकी ११.४ हुंड्यासाठी घटना घडल्या आहेत. याचा अर्थ एकूण हुंड्यासाठी ४६४६ घटना केवळ उत्तर प्रदेश आणि बिहार या दोन राज्यामध्ये घडल्या आहेत. विशेष म्हणजे पुणेकर घातातील ही राज्य आदीवासी बल्लू आहेत ज्या घातात हुंड्यासाठी एकरी घटना घडल्याची नोंद नाही. त्यामुळे कोणता हा प्रश्न उपस्थित होतो. तसेच हुंड्यासाठी छळाच्या NCRB च्या २०१५ च्या अहवालातही घटनांची नोंद पोलिसात झाली असून या घटनांमध्ये शास्त्राने वारं वारं निसर्ग आत्मविश्वास हातूळीत होऊन

हजारो घटना घडतात परंतु अनेक कारणांमुळे त्यांची पोलिसांच्या दखरी नोंद होत नाही किंवा ती प्रकरणे दाबून टाकली जातात हे वास्तव आहे.

१. कौटुंबिक हिंसाचार:-

हुंड्याच्या प्रथेमुळे कुटुंबातील स्त्रियांना जाणीवपूर्वक मानसिक व शारीरिक त्रास देऊन त्यांच्या मोक्या प्रमाणात छळ केला जातो. उदा. अपमानित करणे, तुच्छ लोखने, शारीरिक व मानसिक त्रास देणे, दुखापत वा इजा करणे इत्यादी अशा छळापासून महिलांचे रक्षण करण्यासाठी भारत सरकारने कौटुंबिक हिंसाचार प्रतिबंध कायदा २००५ लागू केला आहे. परंतु ही देखील कौटुंबिक हिंसाचाराच्या घटना मोक्या प्रमाणात घडत आहेत. परंतु अनेक कारणांमुळे महिला त्याबाबतची तक्रार पोलिसांमध्ये करीत नाहीत हि बाब NCRB च्या २०१५ च्या अहवालातील कौटुंबिक हिंसाचाराच्या केवळ ४६१ घटनांची नोंदवरून लक्षात येते.

२. कर्जबाजारीपणा:-

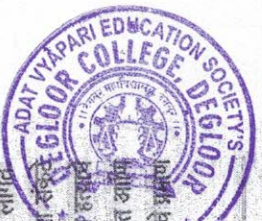
हुंड्यामुळे वधुपक्षाची आर्थिक कोंडी झालेली असते. गरिबांना लग्नासाठी हुंडा देण्यासाठी व्याजाने खालगी किंवा बँकाकडून कर्ज घ्यावे लागते कर्ज फिटले नाहीतर वधुपक्षाला घरदार, जमीन, सोने विकावे लागते त्यामुळे अनेक कुटुंबे हुंड्यामुळे कर्जबाजारी होऊन भिकेला लागतात ग्रामीण भागामध्ये बँकेकडून किंवा खाजगी सावकारकडून घेतल्या जाणाऱ्या कर्जापैकी ८० % कर्ज हे लग्नासाठी घेतले जाते. तसेच एखाद्या शेतकऱ्याने हुंड्यासाठी कर्ज घेतले असल्यास काही वर्षात त्याने आत्महत्या करावी असे समीकरण बनले आहे. महाराष्ट्रामध्ये शेतकऱ्यांच्या होत असलेल्या आत्महत्येमध्ये शेतीच्या नशिबी बरोबरच हुंड्यासाठी तसेच थाटाभाटात लग्न करण्यासाठी घेतलेले कर्ज न फिटणे हे प्रमुख कारण होय.

४. हुंड्यासाठी लग्न:-

हुंडा ही लग्नासाठीची पूर्वअट. अशी समजूत बनल्यामुळे कित्येक लग्न हे केवळ हुंड्यासाठी केले जात आहेत. वधु व वधुपक्षाची मोठी फसवणूक होत आहे. पंजाब राज्यात मार्गल वीस वर्षात विदेशात जाण्याची तरुणामध्ये संधाच लागली आहे परंतु विदेशात जाण्यासाठी पैसा नसल्यामुळे असे तरुण केवळ हुंड्यासाठी लग्न करतात आणि लग्नानंतर पत्नीला माहेरी सोडून विदेशात जाऊन तेथेच स्थाईक होतात असे दिसून येते. पंजाबचे माजी केंद्रीय मंत्री बलवंतसिंग अहलवालिया यांच्या अहवालानुसार २००१ ते २०११ या कालावधीत पंजाबमध्ये अशा ३० हजार घटना घडल्या आहेत. म्हणजे वर्षाला ३ हजार घटना या प्रमाणे रोज एक घटना घडली आहे. परिणामी एका नवीन सामाजिक समस्येचा जन्म झालेला आहे.

५. स्त्री भुणहत्या:-

भारतात पुरुषांच्या तुलनेत स्त्रियांची संख्या घटत जाण्याचे एक महत्त्वाचे कारण म्हणजे स्त्री भुण हत्या होय. स्त्री भुण हत्या म्हणजे मुलगी जन्माला येण्याआगोदरच मातेच्या गर्भाकस्थेतच भुलीची हत्या करणे किंवा मुलीचा गर्भ काढून टाकणे होय. भारतात आपल्या पोटी मुलगी जन्माला येऊ नये असे अनेक माता पित्यांना वाटते. त्यांना अनेक कारणे असून त्यापैकी एक प्रमुख कारण म्हणजे मुलीच्या विवाहासाठी हुंडा देणे बकसकार असणे होय. मुलीचे लग्न करण्यासाठी वधुपित्याला हुंड्याच्या स्वरूपात रोख रक्कस व घंटवस्तु द्यायला देऊन खूप थाटाभाटात लग्न करून घ्यावे लागते परिणामी वधु पक्षाचा यामुळे अनेक आर्थिक संकटांना व अडथळीला सामोरे जावे लागते. ही परिस्थिती किंवा तसेच हुंड्यामुळे टाळण्यासाठी स्त्री भुण हत्या, बातहत्या यासारखे अंधोरी प्रकाराचा अवलंब त्यांच्याकडून केला जातो. स्त्री भुण हत्या प्रमाण अतिशित व ग्रामीण लोकांमध्ये जास्त आहे असा एक समज असून तो पूर्णतः चुकीचा आहे. कारण सुशिक्षित आणि श्रीमंत लोक स्त्री भुणहत्या या मार्गाच्या अवलंब करण्यात पुढे दिसतात. तसेच ग्रामीण भागापेक्षा गावरी घातात असे प्रमाणे जास्त दिसून येते.



**बालविवाहस्य उत्तेजनः-**

हृडा पक्षतीर्षी बालविवाहस्य प्रोत्साहित करणारी पक्षत आहे. कारण हृडापुढे मुलीचे अधिक वजन असते. मुलीचे वजन वाढल्यास हृडाची रक्कमही वाढते त्यामुळे अधिक हृडाचा ताप येतो. मुलीचे वजन वाढल्यास मुलीचे विवाह करतात. त्यामुळे बालविवाहाचेही प्रमाण वाढते.

**घटस्फोट/सम्यक् सोडणे-**

हृडापुढे मुलीचे विवाह झालेला तर तसेच नुकलेले विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते. तसेच विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते. तसेच विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते.

**विजोड विवाहः-**

हृडा पक्षतीर्षी मुलीचे विवाह झालेला तर तसेच नुकलेले विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते. तसेच विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते. तसेच विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते.

**मुलगा व मुलगी यांच्या दुजाभावः-**

हृडा पक्षतीर्षी मुलीचे विवाह झालेला तर तसेच नुकलेले विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते. तसेच विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते. तसेच विवाह झालेला तर मुलीची वजन वाढते.

**वेड्या बळकट/बायबायः-**

हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते.

**प्रत्यक्ष/अपराधन आहेः-**

हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते.

**हृडापुढे वजन वाढतेः-**

हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते.

**हृडापुढे वजन वाढतेः-**

हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते. हृडापुढे वजन वाढते.

**हृडा प्रतिबंधक कायदा १९८१ः-**

हृडा पक्षतीर्षी दुष्प्रतिक्रिया विचार करून हृडा प्रभा बंद करण्यासाठी भारत सरकारने १९८१ मध्ये हृडा प्रतिबंधक कायदा केला आहे. या कायद्यामध्ये १९८६ मध्ये काही सुधारणा केल्या आहेत या कायद्यानुसार हृडा देणे व घेणे या दोन्ही बाबी प्रतिबंधित आहेत असेल त्यासाठी ५ वर्षे कैद व १५ हजार रुबांची तरतूद केली आहे. परंतु हृडा प्रभा ही सर्वमान्य प्रमाणे मानल्यामुळे व या कायद्याची प्रगती अंमलबजावणी होत नसल्यामुळे हृडा पक्षतीर्षी आढावा घेतल्यात अद्याप चर्चा चालू आहे.

**कायद्याची कठोर अंमलबजावणीः-**

हृडा पक्षतीर्षी प्रतिबंध करण्यासाठी केवळ कायदा करणे पुरेसे नाही तर त्या कायद्याची कठोरपणे अंमलबजावणी होणे आवश्यक आहे. भारतामध्ये हृडा प्रतिबंधक कायद्याची कठोर अंमलबजावणी होत नसल्यामुळे हृडा पक्षतीर्षी आढावा घेत नाही. नव्याच वेळी गुन्हाच्या तपासणीतील त्रुटीमुळे किंवा कच्चा दृष्यामुळे आरोपी व्यक्ती ही नमूद वकिलाच्या उपस्थितीत करून घेण्याच्या बळावर आपली सुटका करून घेतात. श्रीमंत लोकांना हा गुन्हा केल्यानंतर त्यांना कठोर शिक्षा होत नाही.

**सामाजिक चळवळी किंवा अंदोलनः-**

हृडा पक्षतीर्षी प्रतिबंध घालण्यासाठी कायदा करण्यात आला आहे परंतु कायदाने समाजसुधारणा होत नाही. सामाजिक सुधारणेसाठी सामाजिक जाणीव असणे आवश्यक असते. ही सामाजिक जाणीव निर्माण करण्यासाठी हृडा प्रभावरोधक मंडळा प्रमाणित सामाजिक चळवळ उभी करणे ही सामाजिक गरज बनली आहे.

**४. जनजागृतीः-**

समाजामध्ये हृडा प्रभावरोधक व्यापक अशी जनजागृती घडवून आणावी. समाजातल्या सर्व स्तरांमध्ये हृडा बंदी कायद्याबद्दल माहितीचा प्रसार करावा. हृडा विरोधी प्रचार करून हृडा विरोधी लोकमत तयार करावे त्यासाठी विविध माध्यमांचा व साधनांचा वापर करून हृडा बंदी बाबत जनजागृती करून हृडा विरोधी लोकमत तयार करावे.

**५. शिक्षणाचा प्रसार व स्त्री स्वालंबनः-**

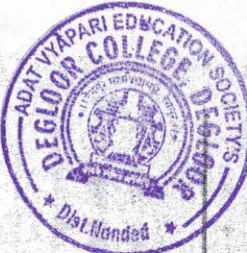
स्त्री शिक्षणाचा प्रसार योद्ध्या प्रमाणात करावा. स्त्री शिक्षणामुळे स्त्रियांच्या व्यक्तीमत्त्वाचा सर्वांगीन विकास होऊन स्त्रिया आपल्या हक्काबाबत अधिक जागृत होतील तसेच शिक्षणामुळे व्यवसाय व नोकरीच्या माध्यमातून त्या आर्थिकपणे जागतिक त्वांमध्ये त्यांचा समाजात दर्जा उंचावेल. शिवाय ते आर्थिकदृष्ट्या आपल्या पतीवर अवलंबून राहणार नाहीत. आपल्या आवडीनुसार शिवाय जीवनसाथी निवडतील.

**६. स्त्री संघटनांचे सक्षमीकरणः-**

स्त्री संघटनांनी अधिक संघटित व सक्षम होऊन अधिक जोमाने हृडा विरोधी जनजागृतीचे कार्य करावे व स्त्रियांच्या हक्कांसाठी संघर्ष करावा. आज घडाल महाराष्ट्रासह देशभर महिलांच्या न्यायहक्कांसाठी वेगवेगळ्या कार्यरत आहेत तरी परंतु हृडा प्रथेला पूर्णपणे प्रतिबंध घालता येऊ शकलेला नाही.

**संदर्भ सूचीः-**

- १. मनसर डी. एन., भारतीय समाज प्रश्न आणि समस्या, अरुणा प्रकाशन लातूर २००३
- २. लोटे ए. ज. भारतातील सामाजिक समस्या, पिंपळगुणे अॅन्ड कंपनी प्रकाशन नागपूर, १९९९
- ३. गंधर्व एन. एन. भारतातील सामाजिक समस्या, विद्याभारती प्रकाशन लातूर
- ४. घडाल व्ही. बी., मानवी हक्क केसागर प्रकाशन पुणे २००२
- ५. NCRB Report २०१५



**Dr. Anil Chidrawar**  
I/C Principal  
A.V. Education Society's  
Degloor College, Degloor Dist. Nanded